दिनांक 27 जुलाई, 2018 को शिशु विकास मंदिर समिति द्वारा संचालित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, धुर्वा में आचार्य सम्मान समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में माननीया राज्यपाल के अभिभाषण के मुख्य बिन्दु:-

- मुझे शिशु विकास मंदिर द्वारा संचालित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, धुर्वा में आयोजित आचार्य सम्मान समारोह जैसे कार्यक्रम में आप सभी के मध्य सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।
- यह प्रसन्नता का विषय है विद्यालय प्रबंधन द्वारा ऐसे सम्मान समारोह के लिए आज के विशेष दिवस का चयन किया गया है। आज गुरू पूर्णिमा का दिन है तथा महर्षि वेदव्यास जी का जन्मोत्सव है। जीवन में गुरू और शिक्षक के महत्व को आनेवाली पीढ़ी को बताने के लिए यह पर्व आदर्श है।
- आचार्य सम्मान समारोह जैसे अहम अवसर पर कहना चाहूँगी कि महान् दार्शनिक अरस्तू ने कहा है कि जन्म देने वालों से अच्छी शिक्षा देने वालों को अधिक सम्मान दिया जाना चाहिए क्योंकि जन्म देने वाले ने तो बस जन्म दिया है, पर शिक्षकों ने जीना सिखाया है।
- गुरुजनों से राज्य एवं राष्ट्र को काफी अपेक्षायें हैं। आप ही व्यक्ति के अन्दर मौजूद दुर्गुणों व बूरे विचारों को दूर कर, न सिर्फ उसे योग्य व्यक्ति बनाते हैं, बल्कि समाज एवं राष्ट्र

को भी प्रकाशमान करते हैं। हमारे शिक्षक राष्ट्रनिर्माण के महान सारथि है।

- शिक्षकों को सिर्फ अच्छी तरह अध्यापन करके हर संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए, उसे अपने छात्रों का स्नेह और आदर हासिल करना चाहिए। सम्मान शिक्षक भर होने से नहीं मिलता, उसे अर्जित करना पड़ता है।
- शिक्षक का काम है ज्ञान को एकत्र करना या प्राप्त करना और फिर उसे बांटना। उसे ज्ञान का दीपक बनकर चारों तरफ अपना प्रकाश फैलाना चाहिये, उनके ज्ञान की गंगा हमेशा बढ़ती रहनी चाहिये।
- भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है, तो समाज के तीन प्रमुख सदस्य माता, पिता और गुरू को अपनी भूमिका पूर्ण निर्वाह करना होगा।
- जैसा कि आप सभी जानते हैं कि शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की कुंजी होती है और हमारे शिक्षक राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।
- हमारे गुरूजनों के कंधों पर विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने एवं उन्हें आत्मबल प्रदान करने का दायित्व है, ताकि वे समाज एवं देश की सेवा निष्ठा एवं समर्पण से कर सकें।
- शिक्षक समुदाय ने इस राष्ट्र को सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से सुशोभित करनेवाले वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, अभियंता, चिकित्सक, प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी अधिकारियों जैसे

अन्य के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उनके असली सम्मान ये गौरवमयी छात्र ही हैं।

- वास्तव में शिक्षा से जुड़े हुए व्यक्ति का असली सम्मान तब बढ़ता है, जब कोई विद्यार्थी यह कहता है, महसूस करता है कि उसकी सफलता के पीछे अमूक शिक्षक का विशेष हाथ है।
- सुखद है कि आज इस विद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा संपादित पत्रिका ''अरूणोदय'' का लोकार्पण कार्यक्रम भी है। इस पत्रिका के सम्पादन कार्य में भाग लेने वाले सभी छात्र–छात्राओं को शुभकामनायें देती हूँ तथा उनकी इस पहल की सराहना करती हूँ।
- पत्रिका के सम्पादन कार्य से छात्र–छात्राओं के जोड़ने की पहल सराहनीय है। इससे बच्चों में निहित रचनात्मक प्रतिभा विकसित होगी। इस प्रकार की पहल से हमारे बच्चे **innovative ideas** के प्रति प्रेरित होंगे, उनमें ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में ललक बढ़ेगी। इस कार्य में शिक्षक–शिक्षिकाएँ भी उनकी सहायता करें, उन्हें प्रोत्साहित करें और उनके मनोबल में वृद्धि लाने का कार्य करें।
- आज किसी भी शिक्षण संस्थान को बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु समर्पित भाव से कार्य करने की आवश्यकता है।
- अच्छे शिक्षण संस्थान की यह पहचान होनी चाहिये कि वह विद्यार्थियों के समग्र विकास पर ध्यान दे। पठन–पाठन के

साथ–साथ खेल, अनुशासन, शिष्टाचार एवं अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम का भी पाठ पढ़ाये।

- किसी भी देश एवं समाज के निर्माण हेतु बच्चों को **Quality Education** सुलभ कराने के साथ–साथ अनुशासन और संस्कार व नैतिकता की ज्ञान देना आवश्यक है। इससे बच्चों का चारित्रिक विकास भी होता है।
- भारत को विश्व गुरू कहा जाता था। इसने सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान, अहिंसा, शांति, त्याग, मोक्ष, प्रेम, बन्धुत्व का संदेश दिया है। विश्व गुरू होने के उस गौरव को पुनः प्राप्त करना है। इस परिप्रेक्ष्य में हम सभी को मिलकर सकारात्मक कार्य कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देना होगा। सबकी उन्नति में ही राष्ट्र की प्रगति निहित है।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!